

श्री महावीराय नमः जैनं जयति शासनम्

श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः



## जैन संस्कार शिविर पाठ्यक्रम भाग-2



संस्करण : 2020

## प्रकाशकीय

शासनपति भगवान् महावीर स्वामी ने सम्यग्ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप, इन चारों को मोक्ष का द्वार फरमाया है। इनमें चारित्र एवं तप शरीर-साध्य होने से इह भविक हैं अर्थात् केवल धारण-कर्ता तक सीमित रहते हैं, अन्य व्यक्ति में या परभव में स्थानान्तरित नहीं हो सकते। सम्यग् दर्शन भी आत्मा का ही निश्चयगुण होने से इसका लेन-देन असम्भव है। केवल सम्यग् ज्ञान ही दूसरे को दिया/लिया/पहुंचाया जा सकता है। स्कूल/कालेजों का ज्ञान छात्र-छात्राओं को आजीविका कमाने के लिए सक्षम बनाने पर केन्द्रित रहता है, पर धर्म-शिक्षा का ज्ञान उन्हें सुसंस्कारी व व्यसन-मुक्त बनाकर इस भव व परभव में कल्याण-साधक बनता है।

आज भारतवर्ष में विभिन्न प्रान्तों में, विभिन्न संगठनों द्वारा, विभिन्न शैली में अनेक धर्म-शिक्षण-शिविर लगाए जा रहे हैं। पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर श्री प्रकाश चन्द्र जी म. एवं संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान् मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में नई पीढ़ी को जैन धर्म, जैन धर्म-स्थान व जैन धर्म गुरुओं से जोड़ने का सम्प्रदाय-निरपेक्ष रूप में भगीरथ प्रयास किया जा रहा है।

इस पुस्तक के निर्माण में पूज्य गुरुदेवों एवं विभिन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक जैन सुक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बालकों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इस ही मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन  
शिविर-संयोजक

### प्रकाशक :

जय जिनशासन प्रकाशन  
212, वीर अपार्टमेंट्स, सेक्टर 13,  
रोहिणी, दिल्ली-110 085  
Mob: +91-98102 87446  
Email : jajinshaasanprakaashan@gmail.com

### मुद्रक :

सिस्टम्स विज़न, नई दिल्ली  
Mob: +91-98102 12565  
Email: systemsvision96@gmail.com

## विषयक्रम

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
<b>सूत्र विभाग</b>		
1.	सामायिक-सूत्र अर्थ सहित .....	2
2.	सम्यक्त्व-सूत्र अर्थ सहित .....	5
<b>तत्व विभाग</b>		
3.	18 पापों के नाम .....	7
4.	जैन धर्म के सिद्धान्त .....	8
5.	साधु के 5 महाव्रत .....	9
6.	आत्मा का स्वरूप .....	11
7.	नौ तत्व .....	12
8.	बत्तीस शास्त्र .....	14
<b>काव्य विभाग</b>		
9.	जिनवाणी स्तवन .....	16
10.	मंगल पाठ .....	16
<b>सामान्य ज्ञान विभाग व कथा विभाग</b>		
11.	ज्ञान वृद्धि के उपाय .....	17
12.	श्रावक के पाँच अभिगम .....	18
13.	शाकाहार—एक सर्वोत्तम आहार .....	19
14.	सात कुव्यसन .....	22
15.	भगवान पार्श्वनाथ का जीवन परिचय .....	24
16.	भ. महावीर के 11 गणधर .....	25
17.	इतिहास के झरोखे से .....	26
18.	पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर .....	28
19.	Glossary .....	31



## सामायिक सूत्र

भाग-1 की पुस्तक में हमने सामायिक के बारे में संक्षिप्त रूप (Concise Form) में जाना था। इस पुस्तक में हम सामायिक का विस्तृत (Explanatory) रूप जानेंगे। वैसे तो सामायिक की प्रतिज्ञा (Vow) लेने से पहले हमें सामायिक सम्बन्धी 9 सूत्रों (पाठों) का विधि सहित उच्चारण करना होता है। जिनका औचित्य (Purpose of Reading & Chanting) अलग-अलग है। फिर भी हम सामायिक प्रतिज्ञा के एक मूल पाठ का अर्थ हम यहां पर करेंगे (2 पाठों का अर्थ हम भाग 1 पुस्तक में कर चुके हैं) और शेष का अर्थ आगे करेंगे।

**मूल पाठ:**

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि  
जाव नियमं मुहूर्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं  
न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,  
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि।

**अर्थ:**

करेमि भंते सामाइयं	हे भगवान (मैं) सामायिक करता हूँ
सावज्जं जोगं पच्चक्खामि	पाप सहित व्यापारों का त्याग करता हूँ (i.e. I Forbid All Actions, Which involve Sins)
जाव नियमं + मुहूर्तं पज्जुवासामि	जब तक नियम की उपासना करूं (I worship till my Vow lasts)
दुविहं, तिविहेणं	दो करण: करना, करवाना तीन योग: मन योग, वचन योग, काया योग (ie With Two Fold Activities & Three Fold Yoga)
न करेमि, न कारवेमि	न स्वयं करूंगा, न करवाऊंगा। (I will not Do Myself Nor Will Make Others to do Sinful Activities)
मनसा, वयसा, कायसा	मन से, वचन से, काया से (By Mind, By Speech, By Body)



तस्स भंतेः पडिक्कमामि	हे भगवान् उसका (पूर्व के किये हुए पापों) प्रतिक्रमण करता हूँ (O Lords, I Restrain & Remove My self from All the Sins of past)
निदांमि, गरिहामि	निदां करता हूँ, गर्हा करता हूँ (आत्म साक्षी से) (I hate or censure the sins with the Attestations of my Soul, I reprove the sins with the perception of my Darm Guru)
अप्पाणं वोसिरामि	अपनी आत्मा को अलग करता हूँ (पापों से) (I Vow to Free my Soul from Sins)

हमने पुस्तक भाग-1 में धर्म और पाप सम्बन्धित क्रियाओं (Activities Involving Dharm & Sins) के बारे में जाना था। **जैन धर्म के अनुसार सभी पाप क्रियाओं को 18 भागों में बांटा जा सकता है** और अगर हम इन 18 पाप क्रियाओं का करना बंद कर देगे तो धर्म (Dharm) स्वतः अपने आप हो जाएगा, उसके लिए हमें अलग से कोई और अन्य प्रयास नहीं करना पड़ेगा। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि 18 पापों की वृत्ति और प्रवृत्ति छोड़कर समभाव प्राप्त करने को सामायिक कहते हैं।

सबसे महत्व पूर्ण बात यह है कि सामायिक की अवधि के बीच हम कोई भी पाप क्रिया मन से, वचन से, काया से न करते हैं और न ही करवाते हैं।

सामायिक यदि पूर्ण विधि से ग्रहण की जाए और पारी (समाप्त) जाए तो विशेष लाभकारी रहती है।

सामायिक के 9 पाठ हैं:—

1. नवकार-सूत्र
2. गुरुवन्दन-सूत्र
3. सम्यक्त्व-सूत्र
4. आलोचना-सूत्र
5. कायोत्सर्ग-सूत्र
6. चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र
7. प्रतिज्ञा-सूत्र (सामायिक-सूत्र)
8. शक्रस्तव-सूत्र
9. सामायिक-समाप्ति-सूत्र

### सामायिक करने की विधि:

1. पहले स्थान, आसन, पूजनी, मुखवस्त्रिका की प्रतिलेखना कर आसन बिछाएं। मुख पर मुखवस्त्रिका बांधें। विराजित साधु-सतियों को वन्दन करें या पूर्व-उत्तर दिशा में 3 बार तिक्रुतो के पाठ से गुरुवन्दना करें।
2. खड़े होकर नवकार मंत्र पढ़ें, सम्यक्त्व सूत्र, आलोचना सूत्र और कायोत्सर्ग सूत्र पढ़कर ध्यान (Meditation) में स्थित हों।



3. एक बार चतुर्विंशति-स्तव सूत्र पढ़ें। एक नवकार पढ़कर ध्यान खोलें।
4. अब पुनः बोलकर चतुर्विंशति-स्तव [लोगस्स] सूत्र पढ़ें
5. अब प्रतिज्ञा सूत्र पढ़ें और एक सामायिक करनी हो तो मुहूर्त। घड़ी 2 (दो सामायिक के लिए मुहूर्त 2 घड़ी 4 बोलकर पढ़ें।)
6. फिर नीचे बैठकर बायां घुटना खड़ा कर, दोनों हाथ जोड़कर दो बार शक्रस्तव सूत्र (नमोत्थुणं का पाठ) पढ़ें। दूसरी बार में 'ठाणं संपताणं' के स्थान पर 'ठाणं संमापाविऊ कम्माणं' बोले और इसके बाद घड़ी में समय देखकर सामायिक की शुरुआत करें।

### सामायिक पारने की विधि:

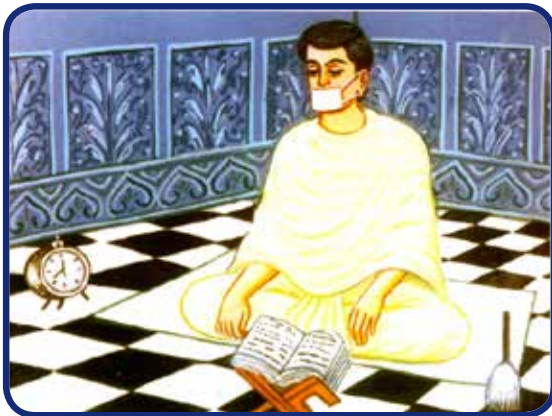
ऊपर लिखित विधि अनुसार प्रतिज्ञा सूत्र छोड़कर, बाकी सूत्रों को पढ़ते हुए अंत में समाप्ति सूत्र पढ़ें और आखरी में तीन बार गुरुवन्दना सूत्र पढ़ें।

### समाप्ति सूत्र:

“नौवें सामायिक व्रत के विषय में, जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोऊं। मन, वचन, काया का खोटा योग बरताया हो, सामायिक में समता न की हो, बिना पूगी पारी हो। 10 मन के, 10 वचन के, 12 काया के, इन 32 दोषों में कोई पाप-दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।”

सामायिक में स्त्री कथा/पुरुष कथा, भक्त (भोजन) कथा, देश कथा, राज कथा, इन 4 प्रकार की कथाओं से बचना चाहिए और आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा तथा परिग्रहसंज्ञा नामक इन 4 संज्ञाओं का सेवन नहीं करना है।

सामायिक में बैठने की मुद्रा



## सम्यक्त्व सूत्र

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।

जिणपण्णतं तत्तं इअ सम्मतं मए गहियं ॥1॥

पंचिदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेर गुत्तिधरो ।

चउविह कसायमुक्को, इअ अट्टारसगुणेहिं संजुत्तो ॥2॥

पंचमहव्वयजुत्तो, पंच विहायारपालणसमत्थो ।

पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झं ॥1॥

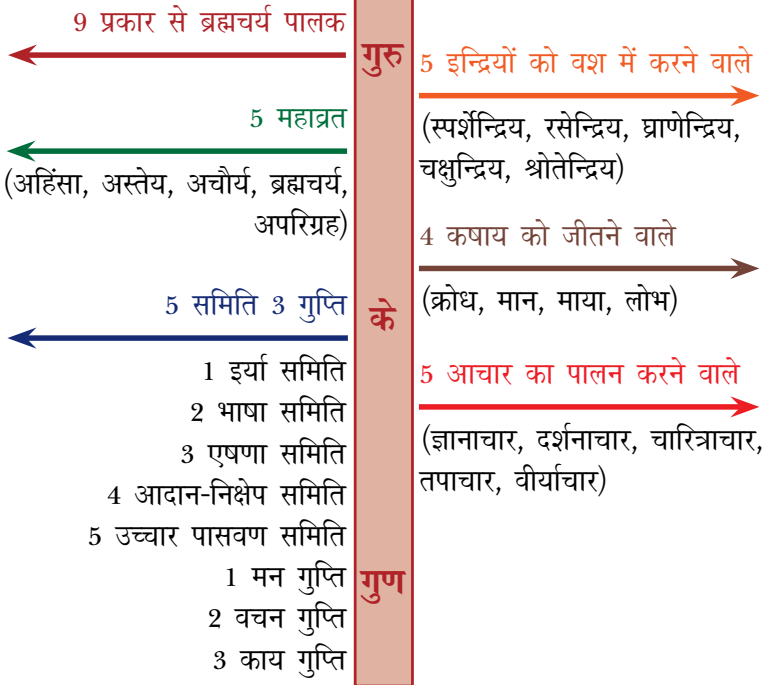
इस पाठ में देव, गुरु और धर्म की पहचान के बारे में बताया गया है और किसी साधु में मुख्य रूप से क्या-2 गुण होने चाहिए, उनका वर्णन है।

अर्थ:

अरिहंतो मह देवो	अरिहंत मेरे देव हैं
जाव-जीवं सुसाहुणो गुरुणो	जीवन पर्यन्त श्रेष्ठ साधु गुरु हैं
जिण पण्णतं तत्तं	जिन भगवान् द्वारा प्ररूपित तत्व (धर्म)
इयं सम्मतं मए गहियं	यह सम्यक्त्व मैंने ग्रहण किया है
पंचिदिय संवरणो:	पाँच इन्द्रियों (Senses) को संवर (Control) में करने वाले
तह	तथा इसी प्रकार
नवविह बंभचेर गुत्तिधरो	नौ प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करने वाले
चउविह कसाय मुक्को	4 प्रकार के कषायों से मुक्त
इय अट्टारस गुणेहिं संजुत्तो	इन 18 गुणों से सहित
पंच महव्वय जुत्तो	5 महाव्रतों से युक्त



पंच विहायार पालण समत्थो	5 प्रकार का आचार (Conduct) पालने में समर्थ (Competent)
पंच समिओ तिगुत्तो	5 समिति 3 गुप्ति
छत्ती गुणो गुरुमज्झं	36 गुणों वाले मेरे गुरु हैं (5+9+4+5+5+5+3=36)



जैन साधु, उपर लिखित 36 गुणों के धारक होते हैं। 5 समिति, 3 गुप्ति को अष्ट प्रवचन माता भी कहते हैं। हमें किसी भी साधु-साध्वी में इन 36 गुणों के आधार पर ही श्रद्धा करनी चाहिए।





## 18 पापों के नाम

जैन धर्म के अनुसार, वैसे तो अनेक प्रकार के पाप होते हैं परन्तु फिर भी उनको संक्षिप्त रूप में 18 प्रकार से बताया जा सकता है, जो कि निम्नलिखित हैं:-

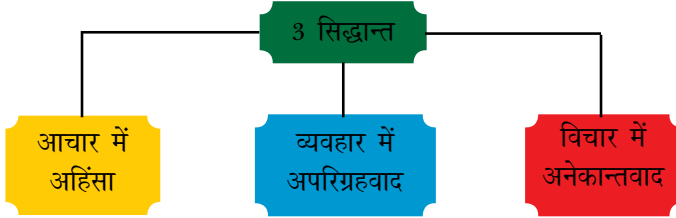
1.	हिंसा	Violence
2.	झूठ	Lie (Falsehood)
3.	चोरी	Stealing
4.	अब्रह्मचर्य	Non-Celibacy
5.	परिग्रह	Possession
6.	क्रोध	Anger
7.	मान (अहंकार)	Proud (Arrogant)
8.	माया (कपट)	Deceit (Deceptive)
9.	लोभ (लालच)	Greed
10.	राग	Attachement
11.	द्वेष	Hate
12.	कलह	Quarrel
13.	अभ्याख्यान(झूठा कलक)	False Accusations
14.	पैशुन्य (चुगली)	Carrying Tales against Others
15.	पर परिवाद (निन्दा)	Being Pleasd or Displeasd with Trifles
16.	रति-अरति	Calumniating Others
17.	माया मृषावाद	Spreading Rumors or Scandals
18.	मित्यादर्शन शल्य	Believing in False Doctrines

एक सच्चे जैन गृहस्थ/श्रावक को उपर लिखित पापों से बचने का हर सम्भव प्रयास रखना चाहिए। तब ही हम भ. महावीर के सच्चे सिपाही कहलाएंगे।



## जैन धर्म के सिद्धान्त

पिछली पुस्तक भाग-1 में हमने धर्म व जैन धर्म की परिभाषा को जाना व जैन धर्म के 3 मुख्य सिद्धान्तों के नामों को जाना। अब हम उनका विस्तृत वर्णन करेंगे।



भ. महावीर ने मानव कल्याण हेतु तीन सिद्धान्त (Three Principle) इस दुनिया को दिए और अगर इन सिद्धान्तों का पालन सभी के द्वारा किया जाए तो हर प्राणी का कल्याण हो सकता है और हर जीव (प्राणी) सुख का अनुभव कर सकता है।

**1. अहिंसा [Non Violence]:** सभी जीवों (Living Being) के प्रति संयम रखना, समभाव रखना अहिंसा है।

**भ. महावीर ने फरमाया कि:**

किसी का भी वध मत करो, क्योंकि जिसे तुम मारना चाहते हो वह और कोई नहीं, तुम स्वयं हो। (सभी जीवों की आत्मा समान है) मैं सब जीवों को क्षमा (Forgive) करता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा करें। मेरी समस्त जीवों के प्रति मैत्री है, किसी से मेरा वैर नहीं है। सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता है। स्वयं जीओ और दूसरों को भी जीनो दो (Live & Let Live)।

जैसे हमें अगर कोई थोड़ी सी pin भी चुभो दे दो हमें कितनी पीड़ा होती है, उसी प्रकार जब हम किसी दूसरे जीव (Living Being) को मारते हैं, पीटते हैं या कष्ट देते हैं तो उन्हें पीड़ा होती है। जब हम स्वयं पीड़ा सहन नहीं करना चाहते हैं तो हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम दूसरे को पीड़ा दें या उसका वध करें। किसी का वध करना या पीड़ा पहुँचाना नरक में जाने का कारण बनता है और वहाँ हमें दुःखों से कोई नहीं बचा सकता है। फिर हम वहाँ तड़फेंगे, चिल्लाएंगे, परन्तु बच नहीं पाएंगे। अतः हम अपने जीवन में भ. महावीर के अहिंसा के



सिद्धान्त को पालेंगे और कम से कम हम किसी निरपराधी जीव को नहीं मारेंगे और उसे कष्ट नहीं पहुंचाएंगे। अभय दान सबसे बड़ा दान भी है।

**2. अपरिग्रहः** इसका अर्थ है वस्तु के प्रति ममता और मूर्छा का अभाव। भ. महावीर ने कहा कि वस्तु परिग्रह नहीं है, अपितु वस्तु के प्रति आकर्षण (Attachments) परिग्रह है। आज समाजवाद (Socialist) और साम्यवाद (Capitalist) की चर्चा चल रही है, पर हमारी आशाएँ, आकांक्षाएँ (Hopes & Desires) आसमान को छूने लगी हैं। इन सब का समाधान करने के लिए भ. महावीर ने हमें एक व्रत दिया जिसे हम इच्छा परिणाम (Limiting the Desires) कहते हैं। अतः हमें वस्तुओं के प्रति कम से कम आकर्षण करना चाहिए।

भ. महावीर ने यह नहीं कहा कि आप आजीविका करते हुए धन एकत्रित न करो, अपितु उन्होंने यह कहा कि हमें अपनी आजीविका नैतिक तरीकों से चलानी चाहिए और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते हुए समाज के अन्य सदस्यों व राष्ट्र की आवश्यकताओं को भी पूरा करने का सद्पुरुषार्थ करें।

**3. अनेकान्तवादः** भ. महावीर ने कहा प्रत्येक घटना के अनेक रूप होते हैं। हम उस घटना के सभी रूपों को देखेंगे, तो हमारी सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। जब हम सोचते हैं कि “मैं ही ठीक हूँ, मैं ही सही हूँ” तब हम उस घटना के एक पहलू को देखते हैं और जब हम यह सोचते हैं कि “मैं ठीक हूँ, मैं सही हूँ और आप (तुम) भी सही हो सकते हो” तो इससे हम उस घटना के दूसरे पहलू को भी देखने की कोशिश कर रहे होते हैं, यही अनेकान्तवाद है। i.e. There are Many Dimensions of any Incident and if we Adopt this Principle in Our Life, it will Solve many Problem of the Universe.

अतः हमें किसी भी घटना, विचार, वस्तु को उसके विभिन्न पहलुओं से सोचना, देखना, विचारना चाहिए और तभी कोई पक्का निर्णय लेना चाहिए।

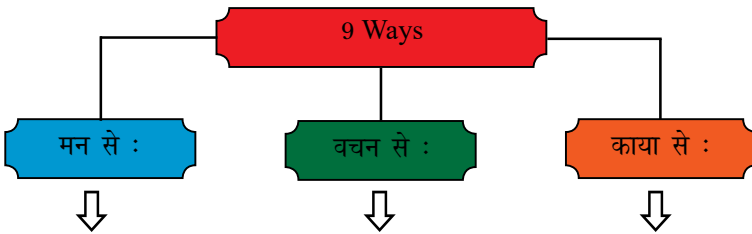


## साधु के 5 महाव्रत



भगवान् महावीर ने किसी भी आत्मा को मोक्ष प्राप्त करने के लिए 2 मार्ग बताए हैं। एक है **अनगार मार्ग** और दूसरा है **आगार मार्ग**। इसको हम श्रमण-धर्म व श्रावक-धर्म से भी जानते हैं। साधु को श्रमण भी कहते हैं। भ. ने कहा कि अगर कोई निश्चित क्रियाओं (Certain Codes of Conduct) का पालन करे तो वह अपने 8 कर्मों से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। अतः साधु मार्ग पर चलने हेतु अपनाने वाले नियमों (Code & Conduct) को जैन साधु के 5 महाव्रत के नाम से जाना जाता है। अतः जब भी कोई व्यक्ति जैन साधु बनता है यानि जैन दीक्षा लेता है तो वह निम्नलिखित 5 नियमों (Code & Conduct) का जीवन भर पालन (Follow) करने की प्रतिज्ञा (Vow) लेता है।

**1. अहिंसा महाव्रत (Non Violence Vow):** जैसा कि हम जानते हैं कि लोक में जीतने भी जीव हैं, वे 4 गतियों में विभाजित किये जा सकते हैं। अतः साधु जीवन भर 4 गति के 84 लाख योनि (Sub-Category) के किसी भी प्रकार के (Small or Big in Size) जीव (Living Being) की हिंसा अपने मन से (Mind), वचन से (Speech), काया से, (Body) न तो स्वयं (Self) करता है, न करवाता है और न ही करने वाले की अनुमोदना, (समर्थन— Praise, Encourage) करता है। हम यह भी कह सकते हैं कि जैन साधु हिंसा के सम्भावित, 9 तरीकों (Ways) से बचता है।



1 करना	1 करना	1 करना
2 करवाना	2 करवाना	2 करवाना
3 करने वाले का समर्थन करना	3 करने वाले का समर्थन करना	3 करने वाले का समर्थन करना

Total ways = 3+3+3=9

**2. सत्य महाव्रत (Truth Vow):** जैन साधु क्रोध (Anger) से, लोभ (Greed) से जीवन भर भय (Fear) या हंसी (Enjoyment) से कभी भी ऊपर लिखित 9 प्रकार (Ways) से झूठ नहीं बोलता है।

**3. अचौर्य महाव्रत (Non-Stealing Vow):** इस व्रत को अस्तेय महाव्रत भी कहते हैं। Owner की permission के बिना जैन साधु जीवन भर के लिए किसी का एक तिनका (Smallest Part of a Leaf) भी नहीं लेते हैं और ऊपर लिखित 9 प्रकार (Ways) से इसका पालन करते हैं।

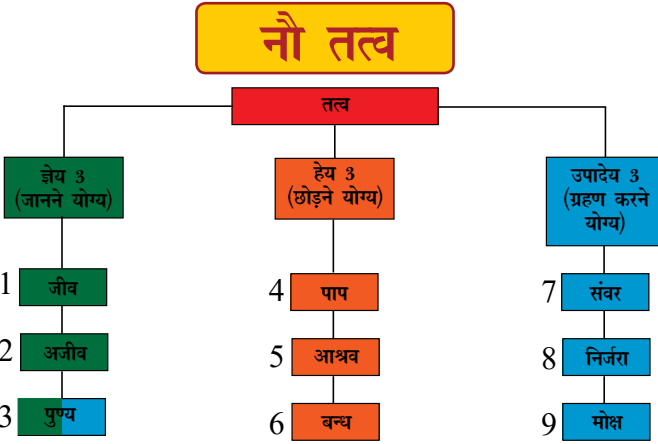
**4. ब्रह्मचर्य महाव्रत (Celibacy Vow):** जैन साधु जीवन भर अपने से Opposite Sex के प्रति कोई आकर्षण (Attraction) नहीं रखते हैं। यहां तक कि वे उसे Touch भी नहीं करते हैं।

**5. अपरिग्रह महाव्रत (Non-Possessiveness Vow):** जैन साधु जीवन भर के लिए सिर्फ बहुत ही कम आवश्यक वस्त्र, पात्र आदि को छोड़कर किसी भी वस्तु के प्रति न कोई आकर्षण रखते हैं और न ही उनका संग्रह (Collection) करते हैं और ऊपर लिखित 9 प्रकार (Ways) से इस महाव्रत का पालन करते हैं। They do not keep any Money, Ornaments, Cash or Property with them.

## आत्मा का स्वरूप

- ☞ आत्मा का कोई रूप (Shape) नहीं है।
- ☞ आत्मा का कोई भार (Weight) नहीं है।
- ☞ आत्मा में सुगंध (Smell) या दुर्गंध (Bad Odour) नहीं है।
- ☞ आत्मा में गर्म (Hot) या ठंडा स्पर्श (Touch) नहीं है।
- ☞ आत्मा का मुलायम (Soft) या खुरदरा (Hard) स्पर्श नहीं है।
- ☞ आत्मा के लिए यश या अपयश नहीं है।
- ☞ आत्मा मोटा (Thick) या पलता (Slim) नहीं है।





वैसे तो तत्व का अर्थ Facts है और किसी वस्तु की Nature को भी तत्व कहते हैं जैसे कि दूध को दूध कहना या जैसे अग्नि का स्वभाव गर्मी है। परन्तु जैन दर्शन को समझने के लिए जिन 9 Basic Elements (तत्वों) की जानकारी आवश्यक है, उन्हें हम 9 तत्व (Nine Elements) कहते हैं। जिनके नाम ऊपर लिखे गए हैं।

### नव तत्व



प्र.1. तत्व किसे कहते हैं?

उ.1. सत्य वस्तु को तत्व कहते हैं, जैसे दूध को दूध कहना।

2. वस्तु का स्वभाव भी तत्व कहलाता है, जैसे अग्नि का स्वभाव उष्ण है, यह तत्व हुआ।

3. मोक्ष- प्राप्ति के लिए अवश्यक जानने-योग्य विषयों को तत्व कहते हैं। ये नौ हैं।

**प्र.2. नौ तत्व कौन-कौन से हैं?**

उ. जीव तत्व, अजीव तत्व, पुण्य तत्व, पाप तत्व, आस्रव तत्व, संवर तत्व, निर्जरा तत्व, बन्ध तत्व, मोक्ष तत्व।

**प्र.3. नौ तत्वों की परिभाषा लिखिए।**

उ.1 **जीव-** जो जीता है, प्राण धारण करता है, चेतना-शक्ति से सम्पन्न है, वह जीव कहलाता है, यथा- हाथी, घोड़ा, पशु, मनुष्य आदि।

2 **अजीव-** जो जीव का विरोधी तत्व है, अर्थात् जीवित नहीं रहता तथा चैतन्य शक्ति से रहित है, वह अजीव कहलाता है, जैसे- मेज, कुर्सी, पलंग आदि।

3 **पुण्य-** जिस शुभ क्रिया से जीव को कालान्तर में सुख मिलता है, वह पुण्य कहलाता है, जैसे- अन्न-दान, जल-दान, वस्त्र-दान आदि।

4 **पाप-** जिस अशुभ क्रिया से जीव को कालान्तर में दुख मिलता है, वह पाप कहलाता है, जैसे-हिंसा, झूठ, चोरी आदि।

5 **आस्रव-** जिन मार्गों से आत्मा में कर्मों का प्रवेश होता है, वे आस्रव कहलाते हैं, जैसे मिथ्यात्व (धर्म-विषयक विपरीत ज्ञान), अविरति (सांसारिक विषय-भोगों को न त्यागना), प्रमाद (धर्म-कार्यों में आलस्य), कषाय (क्रोध, मान माया, लोभ) आदि।

6 **संवर-** जिन मार्गों से आत्मा में कर्मों का प्रवेश रुकता है, वे संवर कहलाते हैं जैसे सम्यक्त्व, विरति, अप्रमाद, अकषाय आदि।

7 **निर्जरा-** आत्मा से लगे कर्मों का कुछ अंश में अलग होना निर्जरा कहलाती है। अनशन (अन्न, जल का त्याग) ऊनोदरी (भूख से कम खाना) आदि निर्जरा के उपाय हैं।

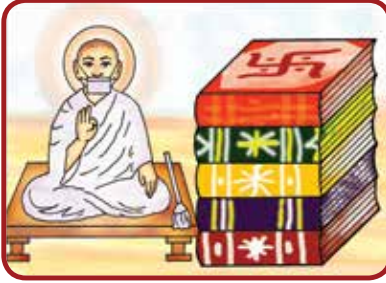
8 **बन्ध-** दूध और पानी की तरह, घी और खिचड़ी की तरह आत्मा और कर्मों का एकमेक होकर बंध जाना बन्ध कहलाता है।

9 **मोक्ष-** आत्मा से सम्पूर्ण कर्मों का पृथक् हो जाना मोक्ष कहलाता है। मोक्ष हो जाने के बाद आत्मा का जन्म-मरण-रूपी भव-भ्रमण समाप्त हो जाता है।

इन नौ तत्वों में जीव व अजीव ज्ञेय (जानने योग्य) संवर, निर्जरा व मोक्ष उपादेय (ग्रहण करने योग्य) हैं। पाप, आस्रव व बन्ध हेय (छोड़ने योग्य) हैं। **पुण्य तत्व गृहस्थ के लिए उपादेय है, परन्तु मुनियों के लिए ज्ञेय है।**



## बत्तीस शास्त्र



जगत् के सब जीवों की रक्षा और दया के लिए तीर्थंकर भगवान धर्म-देशना देते हैं। भगवान की यह वाणी **सूत्र, शास्त्र या आगम** कहलाती है।

आगम के तीन भेद हैं- **सूत्रागम, अर्थागम और उभयागम**। 'धम्मो मंगलमुक्खिठं' यह मूल पाठ सूत्रागम है। 'धर्म उत्कृष्ट मंगल है' यह अर्थागम है। दोनों मिलकर उभयागम या तदुभयागम कहलाते हैं। तीर्थंकर भगवान अर्थरूप आगम की देशना देते हैं, उनके प्रधान शिष्य (गणधर) उनको सूत्र-रूप में ग्रथित करते हैं। इनके आधार पर कुछ विशिष्ट ज्ञानी आचार्य अन्य सूत्रों की भी रचना करते हैं।

तीर्थंकर प्रभु का सम्पूर्ण उपदेश **बारह अंगों** में समाविष्ट होता है। उस उपदेश को उनके गणधर यत्नपूर्वक संभाल कर रखते हैं, इसलिए सम्पूर्ण शास्त्र-भंडार '**द्वादशांग-गणि-पिटक**' कहलाता है।

भगवान महावीर स्वामी ने भी तीर्थ-स्थापना करते हुए गौतम आदि 11 गणधरों को द्वादशांग-वाणी का उपदेश दिया। वीर-निर्वाण के 1000 वर्ष बाद (सन् 473 ई.) 12वां अंग 'दृष्टिवाद' काल-प्रभाव से लुप्त हो गया। अन्य 11 आगमों के भी बहुत से पाठ समाप्त हो गए। सिन्धु में से बिन्दु-मात्र ही शेष रहा।

तीर्थंकरों का उपदेश गणधरों द्वारा मौखिक रूप से ग्रहण किया जाता है, जो गुरु-शिष्य-परम्परा द्वारा आगे से आगे प्रचारित होता है। आगम ज्ञान की इस निधि (खजाना) को संभालने/व्यवस्थित करने या लिपिबद्ध करने के लिए इतिहास में तीन प्रयास हुए हैं।

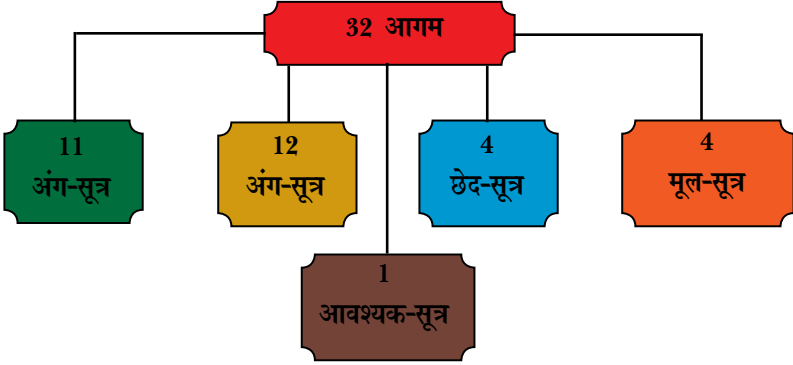
प्रथम प्रयास वीर निर्वाण संवत् 160 वर्ष के लगभग नेपाल देश में हुआ, जब आचार्य भद्रबाहु ने स्थूल-भद्र मुनि को 14 पूर्वों का ज्ञान दिया। द्वितीय प्रयास वीर नि. 827 (सन् 300) में हुआ। तृतीय प्रयास वीर निर्वाण संवत् 980 (सन् 453) में आचार्य देवद्विगणी क्षमाश्रमण के नेतृत्व में वलभी नगरी (गुजरात) में





हुआ। इसमें लगभग 84 जैन आगमों को व्यवस्थित करके लिपिबद्ध किया गया। वर्तमान में 11 अंग एवं 21 अन्य, कुल 32 आगम उपलब्ध हैं। इनकी भाषा अर्धमागधी प्राकृत है। स्थानकवासी व तेरापन्थी सम्प्रदाय इनको मान्य करते हैं। श्वेताम्बर मूर्तिपूजक इन 32 के अतिरिक्त 13 और आगम मानते हैं। अतः वे कुल 45 आगम मानते हैं।

32 आगम पाँच भागों में विभक्त हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं:—



**11 अंग-सूत्र-** 1. आचारांग, 2. सूत्रकृतांग, 3. स्थानांग, 4. समवायांग, 5. व्याख्या-प्रज्ञप्ति (भगवती), 6. ज्ञाताधर्म-कथांग 7. उपासक-दशांग 8. अन्तकृद्-दशांग 9. अनुत्तरोपपातिक 10. प्रश्न-व्याकरण 11. विपाक।

**12 अंग-सूत्र-** 1. उववाई, 2. राय-पसेणी, 3. जीवाजीवाभिगम, 4. प्रज्ञापना, 5. जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति, 6. चन्द्र-प्रज्ञप्ति, 7. सूर्य-प्रज्ञप्ति, 8. निरयावलिया, 9. कप्पवर्डसिया, 10. पुप्फिया, 11. पुप्फचूलिया, 12. वण्हदसा।

**4 छेद-सूत्र-** 1. व्यवहार, 2. बृहत्कल्प, 3. निशीथ, 4. दशा-श्रुतस्कन्ध।

**4 मूल-सूत्र-** 1. दशवैकालिक, 2. उत्तराध्ययन, 3. नन्दी, 4. अनुयोगद्वार।

**1 आवश्यक-सूत्र।**

इन 32 शास्त्रों के मूल, अर्थ या उभय (दोनों) का स्वाध्याय करने से ज्ञानावरण-कर्म का क्षय होता है, मोहनीय कर्म की शृंखलाएं टूटती हैं। और आत्मा विकास करती-करती अरिहन्त और सिद्ध अवस्था को प्राप्त करती है।

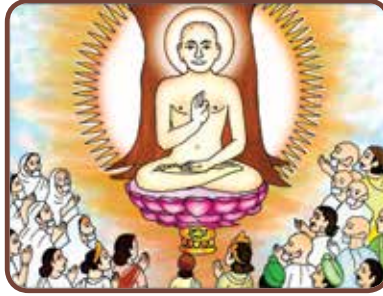


## जिनवाणी स्तवन

जय-जय जिनवाणी नमो-नमो ।  
त्रिभुवन कल्याणी नमो-नमो (टेक)

1. मुक्ता की माला नमो-नमो, निधियों की शाला नमो-नमो ।  
रत्नों की खानी नमो-नमो ॥
2. वैभव की दात्री नमो-नमो, कल्याण विधात्री नमो-नमो ।  
देवी ब्रह्माणी नमो-नमो ॥
3. सब जग की माता नमो-नमो, आगम-विख्याता नमो-नमो ।  
आत्मा की कहानी नमो-नमो ॥
4. जिनपति की करुणा नमो-नमो, जिनशासन-महिमा नमो-नमो ।  
अरिहन्त निशानी नमो-नमो ॥
5. हे तीर्थ सुपावन नमो-नमो, निर्वृति की कारण नमो-नमो ।  
हे अमृत-निधानी नमो-नमो ॥

## मंगल पाठ



मंगल करने वाला, कुशल-क्षेम करने वाला और इस भव (जन्म) व परभव में कल्याण करने वाला मन्त्र 'मंगल-पाठ' कहलाता है। जैन उपासक प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में गुरुजनों से निम्नलिखित मंगल पाठ सुनते हैं (मंगल-पाठ को 'चतुःशरण सूत्र' भी कहते हैं)। यह इस प्रकार है:—

1. चत्तारि मंगल, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,  
साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥

अर्थ:— लोक में चार मंगल हैं- अरिहन्त मंगल हैं, 2. सिद्ध मंगल हैं, 3. साधु मंगल हैं, 4. केवली-प्रणीत (तीर्थकरों द्वारा फरमाया गया) जिन-धर्म मंगल है।



**2. चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,  
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।**

अर्थ:— लोक में चार उत्तम हैं- 1. अरिहंत उत्तम हैं, 2. सिद्ध उत्तम है, 3. साधु उत्तम हैं, 4. केवली-प्रणीत जिन-धर्म उत्तम है ।

**3. चत्तारि-सरणं पवज्जामि-अरिहंते सरणं पवज्जामि,  
सिद्धे सरणं पवज्जामि,  
साहू सरणं पवज्जामि,  
केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।**

अर्थ:— मैं चार की शरण ग्रहण करता हूँ। 1. अरिहंतों की शरण ग्रहण करता हूँ। 2. सिद्धों की शरण ग्रहण करता हूँ। 3. साधुओं की शरण ग्रहण करता हूँ। 4. केवलीप्रणीत जिन-धर्म की शरण ग्रहण करता हूँ।

**चार शरण दुख-हरण जगत् में, और न शरण कोई होगा ।  
जो भव्य प्राणी करे आचरण, उसका अजर अमर पद होगा ॥**

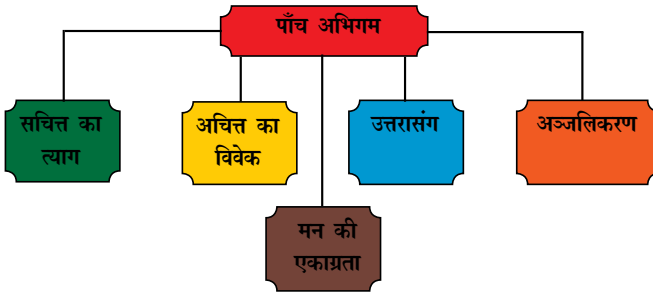
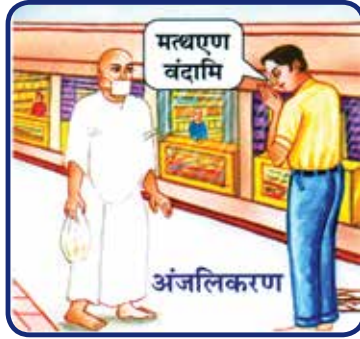
## ज्ञान वृद्धि के उपाय

बच्चों अगर आपको अपने ज्ञान (Knowledge) को बढ़ाना है तो निम्न लिखित बातों का पालन करने से आपका ज्ञान बढ़ जाएगा:—

1. परिश्रम (Hard work) करने से
2. नींद (Sleep) कम करने से
3. भूख से कम खाकर
4. मौन (Silent) रह कर
5. ज्ञानी के पास अभ्यास करने से
6. गुरु की विनय करने से
7. ससांर के प्रति वैराग्य के साथ ज्ञान सिखने से
8. सीखे हुए ज्ञान का परावर्तन (Revision) करने से
9. पाँचों इन्द्रियों (Senses) को वश में करने से
10. ब्रह्मचर्य (Celibacy) का पालन करने से
11. कपट रहित तप करने से



## श्रावक के पाँच अभिगम



भगवान के समवसरण में या साधु-साध्वी के पास उपाश्रय, स्थानक आदि में जाने से पहले हमें जिन नियमों का पालन करना चाहिए, उन्हें हम 'अभिगम' कहते हैं। अभिगम पाँच तरह के होते हैं।

1. **सचित्त का त्याग:** देव, गुरु के समीप जाते समय इलायची, दाख, बादाम, पान, फल फूल, बीज, अनाज, दातुन, शाक आदि सचित्त वनस्पति, कच्चा पानी, नमक, लालटेन, चालू टार्च आदि साथ नहीं ले जाना।
2. **अचित्त का विवेक:** दर्प-सूचक (अभिमान-सूचक) वस्तुएं जैसे छत्र, चामर, जूते, लाठी, वाहन, शस्त्र आदि एक तरफ रखकर एवं वस्त्र व्यवस्थित कर देव-गुरु को वन्दना करना।
3. **उत्तरासंग:** मुंहपत्ती या रुमाल मुंह के ऊपर रखकर गुरुदेवों से वार्तालाप करना या प्रवचन सुनना। देव-गुरु के समक्ष खुले मुंह से नहीं बोला जाता है।
4. **अंजलिकरण:** जहां से देव, गुरु दिखाई दें वहीं से अंजलि (जोड़े हुए दोनों हाथ) मस्तक से लगाकर विनय-पूर्वक वन्दना करना।
5. **मन की एकाग्रता:** गृहकार्य के प्रपंच या पापकार्यों से मन हटाकर, जो कुछ देव-गुरु फरमाते हैं, उस तरफ एकाग्रता रखकर सुनना और देव, गुरु में श्रद्धा रखना।



## शाकाहार—एक सर्वोत्तम आहार



भ. महावीर ने उपदेश दिया है कि हर जीव जीना चाहता है, मरना कोई नहीं चाहता है। जैसे हम जीना चाहते हैं वैसे ही हर जीव जीना चाहता है। अतः हमें किसी जीव को मारने का कोई हक नहीं है। किसी की हिंसा करने का हक (Right) नहीं है।

भोजन के बिना जीव बहुत दिन तक जीवित नहीं रह सकता। खाने की यह आवश्यकता सभी प्रणियों में पायी जाती है चाहे वो मनुष्य हो, जानवर हो, कीट पतंगे हों यहाँ तक कि पेड़ पौधों को भी प्रकृति ने खाने की कोई न कोई प्रक्रिया प्रदान की है।

हर जीव के भोजन के अनुरूप प्रकृति ने उस जीव के शरीर की संरचना बनायी है। हर जीव का भोजन निर्धारित है और हर जीव अपने निर्धारित भोजन के अलावा कुछ और नहीं खाता है। भोजन का निर्धारण भी प्रकृति के नियम के अंतर्गत ही है। उदाहरण के रूप में समझें तो अगर गाय का खाना घास फूस खाना है तो शेर का खाना माँसाहार है। शेर के शरीर की संरचना प्रकृति ने शिकार करने और माँस को खाने और पचाने के लिए बनायी है। शेर घास फूस नहीं खा सकता चूँकि उसका शरीर घास फूस को पचा नहीं सकता। ठीक उसी प्रकार गाय के शरीर की संरचना भी घास फूस पचाने के हिसाब से ही बनी है। गाय कभी भी माँसाहार नहीं कर सकती।

प्रकृति में सब जीव जलवायु के अनुकूल जगहों पर पलते बढ़ते हैं। जैसे ठंडे इलाकों में पाए जाने वाले जानवर, पेड़, पौधे गरम इलाकों में नहीं पाए जाते हैं और गर्म या सम-जलवायु वाले जीव ठंडे प्रदेशों में रह नहीं सकते। प्रकृति ने हर जलवायु और वातावरण के अनुरूप जीव जंतुओं की संरचना बनायी है और उसी संरचना के अनुरूप उनका भोजन निर्धारित किया है।

मनुष्य एक अकेला ऐसा जीव है जो संसार के हर वातावरण, हर प्रकार की जलवायु में पाया जाता है। वो बेहद ठंडे इलाकों में भी रहता है और गर्म रेगिस्तानी इलाकों में भी रह सकता है। मनुष्य की हर जलवायु में रह सकने की क्षमता के कारण ही मनुष्य के भोजन में इतनी विविधता देखी और पायी जाती है। इसी लिए मनुष्य माँसाहारी भी है और शाकाहारी भी।

वातावरण और जलवायु के अनुरूप ही मनुष्य का आहार विहार और विचार का निर्धारण हुआ। साथ ही उस आहार-विहार के अनुरूप ही मनुष्य के शरीर की



संरचना में भी प्रकृति ने कुछ हद तक परिवर्तन किए। जैसे कि ऊँचे पहाड़ों में रहने वाले इंसान के Blood में हीमोग्लोबिन की मात्रा मैदानी इलाकों में रहने वाले मनुष्य से ज्यादा पायी जाती है। जिन इलाकों में सारे साल खेती बागवानी हो सकती है वहाँ प्रकृति ने एक पूरी खाद्य शृंखला की संरचना की है। इस खाद्य शृंखला में शाकाहारी जीव घास फूल पत्ती पर अपना जीवन निर्वाह करते हैं और माँसाहारी जानवर इन शाकाहारी जीवों के शिकार और भक्षण के द्वारा जीवन यापन करते हैं।

इस खाद्य शृंखला का उद्देश्य प्रकृति द्वारा एक ऐसा संतुलन स्थापित करना है जिसमें जीव की आयु के अनुरूप उसकी जनसंख्या पर नियंत्रण रखना है। जिस के कारण प्रकृति में माँसाहारी जीवों की जनसंख्या शाकाहारी जीवों की तुलना में बहुत कम होती है।

साथ ही एक बात और गौर करने योग्य है कि माँसाहारी जानवर शाकाहारी जीवों की तुलना में कम बार भोजन करते हैं।

एक जंगली शेर को 4 या 5 दिन में ही एक बार शिकार मिल पाता है और वो औसतन 4-5 दिन में एक बार भोजन करता है। शिकार के अभाव में एक शेर 14 दिन तक बिना खाए रह सकता है। वहीं शाकाहारी जीव को निरंतर खाने की जरूरत रहती है। एक शाकाहारी जानवर औसतन दिन में 3-4 बार खाना खाता है।

ऐसा इसलिए हो पाता है क्योंकि माँस को पचने में बहुत ज्यादा समय लगता है और माँसाहार से मिलने वाली ऊर्जा मुख्यतः चर्बी होने के कारण माँसाहारी जीव के पाचन तंत्र में लगातार भोजन संरक्षण और ऊर्जा क्षय का चक्र चलता रहता है। शाकाहार को पचने में बहुत कम समय लगता है इसलिए शाकाहारी जीव को जल्दी-जल्दी खाने की जरूरत हो जाती है।

मनुष्य का आहार भी मुख्यतः शाकाहार होना चाहिए क्योंकि मनुष्य के शरीर की संरचना, उसका पाचन तंत्र, भोजन के जल्दी पाचन और अपच का मल त्याग के लिए बना है। मनुष्य के शरीर में अपच भोजन संग्रह हो ही नहीं सकता। मनुष्य की आँतों की संरचना भोजन को जल्दी पचाने के अनुरूप ही बनी है। जब कि माँसाहार भोजन को पचने के लिए ज्यादा समय लगता है। प्रकृति ने मनुष्य को शिकारी के गुण नहीं दिए हैं। मनुष्य शरीर से शिकारी ना हो कर दिमाग से शिकारी बना। मनुष्य केवल अस्त्र-शस्त्र की मदद से ही शिकारी बन पाया। जबकि खेती बागवानी, मनुष्य के शारीरिक क्षमता के अनुरूप कार्य है। मनुष्य ने माँसाहार के लिए भी शिकार नहीं बल्कि पालन की विधि का उपयोग किया है।

एक सवाल यह उठता है की अगर मनुष्य का पाचन तंत्र शाकाहार के अनुरूप बना है तो फिर मनुष्य माँसाहार क्यों करता है? क्या माँसाहारी मनुष्य के पाचन

तंत्र शाकाहारी मनुष्य की तुलना में कुछ अलग तरह से विकसित होते हैं? इन सवालों का जवाब ऐसे समझा जा सकता है की मनुष्य के पाचन तंत्र में उसके भोजन के अनुरूप कुछ बदलाव होते हैं।

मनुष्य की आँतों के अंदर मौजूद असंख्य सूक्ष्म जीव, जो भोजन को पचाने का काम करते हैं, वो माँसाहारी मनुष्य के अंदर शाकाहारी मनुष्य की तुलना में अलग होते हैं। साथ ही माँसाहार भोजन मुख्यतः मनुष्य के परिपेक्ष का परिणाम है। कुछ जलवायु परिस्थितियाँ ऐसी हैं जहाँ अनाज, सब्जी या फल की पैदावार संभव नहीं है। वहाँ मनुष्य ने माँसाहार को ग्रहण किया।

जिस जलवायु में शाकाहार उपलब्ध नहीं हो सकता या जो बहुत ठंडे या गर्म इलाके हैं, माँसाहार मुख्यतः उन्हीं परिस्थितियों में मनुष्य का आहार बना। परंतु जैसे-जैसे संचार और यात्रा के संसाधन बढ़े जैसे जैसे मनुष्य की खाने पीने की आदतें भी एक समाज और परिपेक्ष से निकल कर सारे विश्व में फैल गयीं।

क्या मनुष्य को माँसाहार पूरी तरह से निषेध है? शायद इसका जवाब उस समय और उस परिपेक्ष में निहित है। अगर मनुष्य को शाकाहार भोजन उपलब्ध नहीं है और भोजन की निरंतरता निश्चित नहीं है तो मनुष्य को माँसाहार से निषेध नहीं सोचना चाहिए। परंतु माँसाहार को जिद्दा स्वाद हेतु, सामाजिक व्यवस्था या नए विकल्प के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए।

शाकाहार भोजन माँसाहार से ज़्यादा पौष्टिक, ज़्यादा स्वादिष्ट, ज़्यादा प्रयोगात्मक और ज़्यादा स्वस्थ चुनाव है। शाकाहार भोजन में जितने विकल्प मौजूद हैं उतने माँसाहार में नहीं हैं। शाकाहार में सभी 6 स्वाद संभव हैं परंतु माँसाहार में इतने स्वाद निहित नहीं हैं। माँसाहार को खाने पकाने के लिए भी शाकाहार से बहुत कम विकल्प हैं।

शाकाहार भोजन पर्यावरण की दृष्टि से भी माँसाहार भोजन की अपेक्षा कहीं ज़्यादा पर्यावरण अनुकूल है। माँसाहार भोजन को तैयार करने में शाकाहार भोजन की तुलना में कहीं ज़्यादा पानी, प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल और कार्बन उत्सर्जन होता है। आज जब हम पृथ्वी के भविष्य के लिए पर्यावरण की चिंता कर रहे हैं, ऐसे में शाकाहार एक ज़्यादा बेहतर विकल्प है।

शाकाहार एक बेहतर जीवन शैली, पर्यावरण हितैषी एवं एक ज़्यादा स्वस्थ भोजन विकल्प है। शाकाहार को सिर्फ धार्मिक दृष्टि से ना देख कर, उसके फायदे नुकसान के दृष्टिकोण से देखने पर यह ज्ञान होता है कि शाकाहार एक सर्वोत्तम आहार है और ये ही कारण है कि पारम्परिक रूप से माँसाहारी समाजों में भी शाकाहार का प्रचलन बहुत बढ़ा है।



## सात कुव्यसन



जीवन को दुःख एंव दुर्गति में ले जाने वाली खोटी आदतें (Bad Habits) कुव्यसन कहलाती हैं। मुख्य रूप से ये सात हैं:—

**1. माँस:**— यह जीवित प्राणी को मारकर प्राप्त होता है। पशु को मारने वाला कसाई और खाने वाले राक्षस कहलाता है। माँसाहार तामसी भोजन है। सब धर्मों ने इसकी निन्दा की है। यह करोड़ों ही रोगकारक जीवाणुओं (Bacteria) का घर है। इसके सेवन से कैंसर, हृदयरोग, मस्तिष्काघात, पथरी, अस्थिक्षय, मधुमेह, गठिया आदि रोग जन्म लेते हैं। माँसाहार के कारण विश्व में भुखमरी, जलाभाव, वन-विनाश, वन्य-प्राणि-विनाश, भूमि-क्षरण, वायु-प्रदुषण और ब्रह्माण्ड के तापमान में वृद्धि की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। धर्मग्रन्थों के अनुसार माँसाहारी व्यक्ति मरकर नरक गति में जाता है।

**2. मद्य:**— शराब, तमाखू, पान मसाला, सिग्रेट आदि सब नशे इसी में सम्मिलित हैं। ये ऐसे दीर्घकालिक प्राणहारी रोग हैं, जो जीवन-भर आदमी का पीछा नहीं छोड़ते। विश्व में शराब पर प्रति वर्ष 100 अरब डालर से भी अधिक (\$1=₹74)





खर्च होते हैं। इसके सेवन से शरीर का पाचन-तन्त्र और स्नायु-प्रणाली खराब हो जाती है। कई बार जहरीली शराब पीने से हजारों लोगों की जानें चली जाती हैं। डॉक्टरों के अनुसार एक बार के मदिरा-पान से 25 मिनट आयु कम हो जाती है। विश्व में 50 प्रतिशत हत्या, 40 प्रतिशत हमले, 35 प्रतिशत बलात्कार और 30 प्रतिशत आत्महत्या का कारण शराब है। शराब पीकर गाड़ी चलाने से प्रतिदिन हजारों वाहन दुर्घटना-ग्रस्त होते हैं। यह मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पतन का कारण बनती है।

**3. वेश्या-गमनः—** वेश्या को चुड़ैल कहा है, जो सारे घर को खा जाती है। वेश्या के कोठे पर जाने से घर का और यौवन का नाश होता है। मद्य-माँस आदि के कुव्यसन लगते हैं। बी.डी., एड्स आदि रोग लग जाते हैं। धार्मिक व्यक्ति को होटलों में जाकर कैबरे, डांस आदि भी नहीं देखना चाहिए।

**4. परनारी-गमनः (Extra Merital Relation)—** किसी कवि ने कहा हैः—

पर नारी पैनी छुरी तीन ठौर से खाय ।  
धन छीजे, यौवन घटे, मरे नरक ले जाए ॥

परनारी-सेवन से घरों में अशांति, पति-पत्नी में परस्पर अविश्वास एवं दाम्पत्य सम्बन्ध टूटने तक की नौबत आ जाती है। अनेक रोग जन्म लेते हैं और बड़े-बड़े परिवार नष्ट हो जाते हैं। रावण, दुर्योधन आदि के उदाहरण हमारे सामने हैं।

**5. शिकारः—** शस्त्र, गुल्लक आदि से पशु-पक्षियों को मारना, अंग-भंग करना, क्रीड़ा-कौतुक के लिए परेशान करना, उनका हिंसक युद्ध कराना शिकार है।

जीव-जन्तुओं को मारने के लिए दवा छिड़काना, स्प्रे करना, भिड़-ततैया-मधुमक्खी के छत्तों पर पत्थर फेंकना/आग लगाना भी इसी में सम्मिलित है।

**6. जुआः—** ताश, चौपड़, शतरंज, क्रिकेट, फुटबाल, वीडियो गेम आदि के माध्यम से धन लगाकर खेल खेलना, सट्टा करना, लॉट्री, ड्रॉ के टिकटों को खरीदना व उनका धन्धा करना, चुनावों या खेलों की हार-जीत पर पैसा लगाना इसके अन्तर्गत है। इससे धन की बर्बादी, मानसिक-शांति का ह्रास और घर का विनाश हो जाता है। कोई जुआरी आज तक चैन से नहीं सो पाया है। महाभारत में पाँचों पाण्डव तथा राजा नल जूए में अपना सर्वस्व लुटा बैठे थे।

**7. चोरीः—** सेंध आदि लगाकर, जेब आदि काटकर, रास्ते में लूटकर या किसी और उपाय से बलपूर्वक किसी का धन-हरण करना। चोरी से राजदण्ड, प्राणहरण, हत्याकाण्ड तक के प्रसंग हो जाते हैं। यह अतिनिन्दनीय कर्म है।



## भगवान पार्श्वनाथ का जीवन परिचय



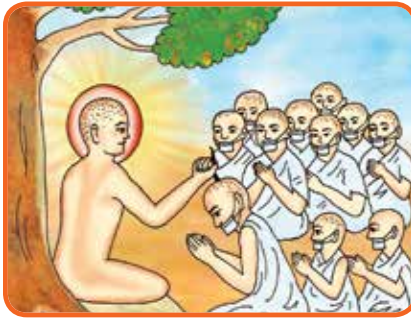
भगवान पार्श्वनाथ जैन शासन के 23वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म ईसा पूर्व 877 में वाराणसी में हुआ। उनके पिता का नाम अश्वसेन व माता का नाम वामा देवी था। कुशस्थल नगरी के राजा प्रसेनजित् की कन्या प्रभावती से उनका विवाह हुआ। ईसा पूर्व नौवीं शताब्दी के लगभग भारतवर्ष के कोन-कोने में हठयोग का बोलबाला था। धर्म के नाम पर दंभ की गहरी छाप लग चुकी थी। लोग वास्तविक धर्म को छोड़कर बाहरी दिखावे में बह चुके थे। उन्हीं दिनों की बात है, वाराणसी नगरी (बनारस) के बाहर बगीचे में एक साधु यज्ञ कर रहा था। राजकुमार पार्श्वनाथ भी टहलते हुए वहाँ आ पहुँचे। वहाँ पर उस विशाल यज्ञ के दर्शनार्थ एक बड़ी भीड़ जमा हो रही थी। राजकुमार ने अपने विशिष्ट ज्ञान (अवधि ज्ञान) से देखा कि धाय-धाय जलते हुए लक्कड़ों में से एक लक्कड़ की पोल में साँप का एक जोड़ा (युगल) तिलमिला रहा है। राजकुमार ने जनता और उस तपस्वी को सावधान करते हुए कहा, 'ऐसी अज्ञान-क्रिया को तिलांजलि दे दो। भला, यह भी कोई धर्म-क्रिया है, जिसमें साँप जल रहे हों?' यह सुनते ही वह साधु चौंका और राजकुमार की बात पर बिगड़ गया। राजकुमार के आदेश से सेवकों ने उस लक्कड़ को फाड़ा, तो उसमें झुलसा हुआ साँप का जोड़ा निकला। राजकुमार ने सर्प-सर्पिणी को नमस्कार मन्त्र सुनाया और समभाव रखने का उपदेश दिया। उन्होंने राजकुमार के उपदेश को शिरोधार्य कर पूर्ण शान्ति व समता से प्राणों को त्याग दिया। दोनों मरकर धरणेन्द्र और पद्मावती नामक देव व देवी बने। सारे लोग राजकुमार की प्रशंसा करते हुए अपने घर लौट आए। साधु मन ही मन राजकुमार पर कुढ़ा, पर उसकी एक भी नहीं चली। लोगों की भी इस तरह के अज्ञानपूर्ण क्रिया-काण्डों से आस्था हट गई। वह साधु अपनी आयु पूर्ण करके 'कमठ' नामक देवता बना। कुछ समय बाद 30 वर्ष की आयु में राजकुमार ने अपने पिता और माता की अनुमति पाकर दीक्षा ग्रहण की।

एक बार वे अहिच्छत्र वन में ध्यानस्थ खड़े थे। उधर से पूर्व जन्म का द्वेषी वही 'कमठ' देव जा रहा था। इन्हें देखते ही उसका वैर जागृत हो गया। उसने ध्यानस्थ



भगवान को अनेक उपसर्ग (कष्ट) दिए। उन पर ओलों की वर्षा की, परन्तु वे ध्यान से विचलित नहीं हुए। तब उसने क्रोध में आकर मुसलाधार वर्षा की, परन्तु वे फिर भी ध्यान से विचलित नहीं हुए। आकाश में दिल दहलाने वाली मेघ-गर्जना होने लगी। कुछ ही क्षणों में चारों ओर पानी ही पानी हो गया। भगवान पार्श्व पानी में डूबने लगे। पानी गले तक आ गया। उधर नाग-नागिन धरणेन्द्र-पद्मावती ने अवधि ज्ञान से देखा कि हमारे उपकारी भगवान पार्श्व को कोई दुष्ट देव उपसर्ग दे रहा है। तत्काल दोनों नीचे आये और उन पर सर्प-फण की छाया करके उनका उपसर्ग शांत किया। **कुल 83 दिन** की कठोर साधना के उपरांत प्रभु पार्श्व को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। लगभग **70 वर्ष** तक प्रभु ने जन-कल्याणार्थ विहार और धर्म-प्रचार किया। उनके धर्म-संघ में **16,000 साधु, 38,000 साध्वियाँ, 1,64,000 श्रावक तथा 3,27,000 श्राविकाएँ थी**। पूर्ण 100 वर्ष की आयु में उनका निर्वाण हुआ। उनकी स्तुति में अनेकों मन्त्र तथा चमत्कारी स्तोत्र रचे गए, जिनमें 'कल्याण मन्दिर' व 'उपसर्ग-हर-स्तोत्र' अति प्रसिद्ध हैं। सब प्रकार की चिंताओं का हरण करने के कारण प्रभु पार्श्व को 'चिंतामणि पार्श्वनाथ' भी कहा जाता है।

## भ. महावीर के 11 गणधर



**24वें तीर्थंकर** श्रमण भगवान महावीर स्वामी जी के कुल 14,000 शिष्य थे। उनकी सर्वविध आचार-व्यवस्था संभालने वाले 11 प्रमुख सन्त 'गणधर' कहलाते थे। महावीर प्रभु को वैशाख शुदी दसवीं को केवल ज्ञान हुआ। अगले दिन एकादशी तिथि को मध्यमपावा नगरी में समवसरण की रचना हुई। ये सभी विद्वान उस नगरी में सोमिल ब्राह्मण के यज्ञ में आमन्त्रित थे। सभी अपूर्व मेधा, प्रज्ञा और शास्त्र-ज्ञान के भण्डार थे। भगवान महावीर की दिव्य ऋद्धि से आकर्षित होकर यज्ञ-मण्डप छोड़कर उनके श्रीचरणों में पहुंचे और दीक्षित हुए। उस समय इनके साथ **4400 शिष्य** थे। वे भी साथ ही दीक्षित हुए।

11 गणधरों के नाम इस प्रकार हैं:—

1. इन्द्रभूति जी, 2. अग्निभूति जी, 3. वायुभूति जी, 4. व्यक्त स्वामी जी, 5. सुधर्मा स्वामी जी, 6. मण्डितपुत्र जी, 7. मौर्यपुत्र जी, 8. अकंपित जी, 9. अचलाभ्राता जी, 10. मेतार्य स्वामी जी, 11. प्रभास स्वामी जी।



## इतिहास के झरोखे से



**1. सम्राट चन्द्रगुप्त:** ये वीर निर्वाण की दूसरी शताब्दी में (ईसा से लगभग 325 वर्ष पूर्व) भारतवर्ष के अतितेजस्वी सम्राट् हुए। इन्होंने विद्वान ब्राह्मण चाणक्य के निर्देशन में अत्याचारी नन्द वंश को उखाड़ कर मौर्यवंश की स्थापना की। ई. पू. 305 में यूनान नरेश सैल्यूकस ने भारत पर आक्रमण किया। तब सम्राट् ने उसे युद्ध में करारी मात दी और काबुल, कान्धार तक के प्रदेशों को यूनानी दासता से मुक्त कराकर अपना साम्राज्य स्थापित किया। ज्ञात इतिहास में भारतवर्ष में आज तक इतना बड़ा सम्राट् अन्य कोई नहीं हुआ।

इतिहास की बिखरी कड़ियों के जोड़ने से आज ये सिद्ध हो चुका है कि चन्द्रगुप्त एक जैन राजा थे। उनके गुरु चाणक्य भी जैन धर्म-सिद्धान्तों पर दृढ़ आस्था रखते थे। वीर-शासन के पाँचवें आचार्य भद्रबाहु के साथ चन्द्रगुप्त की अनेक वार्ताएं व घटनाएं मिलती हैं। एक बार उनको रात्रि में 17 स्वप्न आए, जिनका विश्लेषण आचार्य भद्रबाहु ने किया। उल्लेखों से यह प्रमाणित होता है कि 25 वर्ष शासन करने के बाद चन्द्रगुप्त ने अपने पुत्र बिन्दुसार को राज्य सौंपकर स्वयं जैन मुनि की दीक्षा ली और श्री श्रवणबेलगोला तीर्थ पर संथारापूर्वक शरीर-त्याग किया।

**2. आशाशाह और पन्नाधाय:** आशाशाह मेवाड़ (राजस्थान) के एक साहसी जैन युवक थे। ये कुम्भलनेर दुर्ग के दुर्गपाल पद पर नियुक्त थे। उस समय महाराणा रन्तसिंह की मृत्यु के बाद दासीपुत्र बनवीर ने उत्तराधिकारी विक्रमाजीत को मारकर सिंहासन पर अधिकार कर लिया। विक्रमाजीत का लघुभ्राता उदय सिंह अभी शिशु था। बनवीर उसे भी मारना चाहता था। तब राज-परिवार की एक सेविका पन्नाधाय, जो एक जैन श्राविका थी, ने अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह की प्राण-रक्षा की। शिशु उदय को लेकर पन्नाधाय चित्तौड़ से निकल गई। उसने अनेक सामन्त-सरदारों के पास जाकर उदय सिंह को शरण देने की याचना की। मृत्यु-भय से कोई भी तैयार नहीं हुआ। तब वह आशाशाह के पास पहुंची। पहले-पहल वे भी झिझके। तब उनकी माँ एकदम कटार निकाल कर उन पर झपटी कि ऐसे कायर पुत्र से तो मैं निपूती ही भली थी।



इससे आशाशाह को उत्साह मिला। उन्होंने उदय को गोद में लेकर प्रण किया कि मैं प्राण देकर भी मेवाड़ के इस शिशु की रक्षा करूँगा। आशाशाह ने उदय सिंह को अपना 'भतीजा' प्रचारित कर पालन किया। समय आने पर उदय सिंह चित्तौड़ के राज-सिंहासन पर आसीन हुआ।

**3. भामांशाह:** मेवाड़ (राजस्थान) के विख्यात योद्धा भामांशाह ओसवाल जैन थे (जन्म 27.1.1547, निधन 28.1.1640)। ये महाराणा प्रताप के मन्त्री भी थे और अन्तरंग सखा भी। इन्होंने जैन होते हुए भी, मातृभूमि के गौरव की रक्षा-हेतु, हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी तलवार के अद्भुत जौहर दिखाए। महाराणा उस युद्ध में हार कर वनों में भाग गए थे। न उनके पास सेना बची थी, न धन। वे अपने बच्चों को घास की रोटी खिलाने पर मजबूर हो गए थे। एक समय ऐसा भी आया, जब वे अपनी राजपूती आन-बान को गिरवी रखकर बादशाह अकबर से सन्धि करने को तैयार हो गए थे। तभी वीर भामांशाह उनके चरणों में पहुंचे और अपनी सारी सम्पत्ति उनके चरणों में अर्पित कर दी। भामांशाह के दिए धन के बल पर महाराणा की 25,000 सेना का 12 वर्ष के लिए निर्वाह चला। इससे सेना में एक नवीन उत्साह का संचार हुआ और अन्ततः मुलगसेना को मेवाड़ से खदेड़ दिया गया।

**4. दीवान अमर चन्द जैन:** ये जयपुर नरेश के विशेष कृपापात्र थे। बड़े ही सत्य निष्ठ, मधुरता और करुणा आदि गुणों से ओतप्रोत। एक बार राजा ने वन से एक शेर को पकड़ा। दरबारियों से पूछा कि कौन इस शेर के लिए माँस आदि का प्रबन्ध करेगा? इस पर दीवान जी ने कहा, 'महाराज, क्या यह अनिवार्य है कि शेर को माँस ही खिलाया जाए?' राजा ने व्यंग्य किया, 'तो क्या आप शेर को जलेबियां खिलाएंगे?' दीवान ने विश्वासपूर्वक कहा, 'क्यों नहीं महाराज! आप यदि आज्ञा दें, तो मैं शेर को जलेबियां भी खिला सकता हूँ।'

राजा ने शेर को दीवान जी के अधिकार में सौंप दिया। वे तीन दिन तक शेर के पिंजरे में जलेबियों के थाल भिजवाते रहे, पर शेर ने उनको नहीं खाया। चौथे दिन दीवान जी स्वयं जलेबियों का थाल लेकर शेर के पिंजरे में गए और निवेदन किया, 'वनराज, ये जलेबियां हैं। इनको खाकर अपनी भूख शान्त करो, अन्यथा मैं प्रस्तुत हूँ, मुझे खा डालो।' कहते हैं, शेर एक बार तो गुराया, पर फिर जलेबी खा ली। यह था एक अहिंसक की अहिंसा का चमत्कार!

**5. आचार्य हीर विजय सूरि (1528-1597 ई.):** ये जैन धर्म-शासन के विशेष प्रभावक आचार्य हुए। बादशाह अकबर के दरबार में उनको विशेष सम्मान प्राप्त था। जब कभी वे दरबार में पधारते, तब बादशाह सिंहासन से खड़े होकर उनका स्वागत करते थे। आचार्य श्री के उपदेश से प्रभावित होकर बादशाह ने न केवल माँसाहार का सेवन काफी कम कर दिया, अपितु जैन पर्व 'पर्युषण' के आठ दिनों में पशुवध और शिकार पर प्रतिबन्ध लगाने का फरमान भी जारी किया।



## पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर

	प्रश्न	उत्तर
1	हमें आहार कैसा करना चाहिये ?	शुद्ध शाकाहारी
2	जैन धर्म के 3 सिद्धान्त क्या हैं ?	1. आचार में अहिंसा 2. विचार में अनेकान्तवाद 3. व्यवहार में अपरिग्रहवाद
3	जैन धर्म की आराधना किस प्रकार से की जा सकती है ?	साधु बनकर, श्रावक बनकर
4	जैन साधुओं के मुख्य नियम कितने हैं ?	पाँच (अहिंसा, अचौर्य, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह)
5	स्वस्थ जीवन के लिए हमें कैसा भोजन करना चाहिए	शाकाहार
6	9 तत्व क्या हैं?	जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष
7	किन 7 कुव्यसनों से बचें?	माँस, मद्य, वेश्यागमन, परनारी, शिकार, जुआ, चोरी
8	भगवान महावीर की वाणी कितने आगमों (शास्त्रों) में लिखित है?	32
9	आचार्य के कितने गुण होते हैं?	36 गुण
10	भ. पार्श्वनाथ का जन्म कब हुआ?	ईसा पूर्व 877 (वाराणसी में)
11	भ. पार्श्वनाथ के माता-पिता का नाम?	राजा अश्वसेन, माती वामादेवी
12	साधना काल में भ. पार्श्वनाथ की किसने सहायता की?	धरेणन्द्र-पदमावती ने
13	पाँच अभिगमों के नाम?	सचित का त्याग, अचित का विवेक, उत्तरासंग, अज्जलि करण, मन की एकाग्रता
14	लोक में कितने मंगल हैं?	4 अरिहन्त, सिद्ध, साधु और जिन धर्म
15	जीव किसे कहते हैं?	जिसमें चेतना हो, ज्ञान हो, जानने-देखने कि शक्ति हो
16	अजीव किसे कहते हैं?	जिसमें जानने देखने कि शक्ति न हो
17	मनुष्य जन्म से शाकाहारी है या माँसहारी?	शाकाहारी



## पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर

	प्रश्न	उत्तर
18	जैन धर्म के 3 प्रमुख सिद्धांतों में प्रथम सिद्धान्त कौन सा है?	अहिंसा
19	अनेकान्तवाद सिद्धान्त का क्या अर्थ है?	किसी वस्तु को विभिन्न दृष्टिकोण से देखना
20	अपरिग्रह का क्या अर्थ है?	ममता/मूर्छा का अभाव
21	समिति और गुप्ति कितनी-कितनी हैं?	पाँच और तीन
22	भाषा समिति का क्या अर्थ है?	विवेक पूर्वक बोलना
23	मन गुप्ति का क्या अर्थ है?	मन को वश में रखना
24	भगवान महावीर के कितने गणधर थे?	ग्यारह
25	भ. महावीर के प्रथम गणधर कौन थे?	इन्द्रभूति गौतम
26	इन्द्रभूति को भ. के पास आने से पहले क्या शंका थी?	जीव (आत्मा) है या नहीं
27	स्थानकवासी परम्परा के अनुसार आगम कितने हैं?	32
28	उत्तराध्ययन सूत्र कौन सा आगम है?	मूल आगम
29	साधू/साध्वी चार्तुमास के अतिरिक्त एक स्थान पर अधिकतम कितने दिन ठहर सकते हैं?	29/58 दिन
30	जैन धर्म में स्थानकवासी परम्परा के अनुसार तत्व कितने हैं?	9
31	तत्व किसे कहते हैं?	मोक्ष प्राप्ति के लिए जानने योग्य Basic Things
32	हाथी, घोड़ा, मनुष्य, चीटी कौन सा तत्व है?	जीव तत्व
33	मेज, कुर्सी, आदि कौन सा तत्व है?	अजीव तत्व
34	अन्नदान, जलदान, आदि कौन सा तत्व है?	पुण्य तत्व
35	हिंसा, झुठ बोलना, चोरी करना, कौन सा तत्व है?	पाप तत्व
36	आत्मा में कर्मों का प्रवेश किस तत्व से आता है?	आश्रय तत्व
37	आत्मा में कर्मों का प्रवेश किस तत्व से रुकता है?	संवर तत्व



## पाठ्यक्रम सम्बंधित मुख्य प्रश्नोत्तर

	प्रश्न	उत्तर
38	अकषाय कौन सा तत्व है?	संवर तत्व
39	कर्मों का कुछ अंशों में आत्मा से हटना कौन सा तत्व है?	निर्जरा तत्व
40	भूख से कम खाना कौन सा तत्व है?	निर्जरा तत्व
41	आत्मा और कर्मों का एकमएक होना कौन सा तत्व है?	बंध तत्व
42	आत्मा से सम्पूर्ण कर्मों का पृथक होना कौन सा तत्व है?	मोक्ष तत्व
43	जैन धर्म के अनुसार पाप कितने प्रकार के हैं?	18
44	सबसे बड़ा पाप कौन सा है?	मित्थात्व
45	क्रोध मान माया और लोभ को सामुहिक रूप से क्या कहते हैं?	कषाय



# Glossary

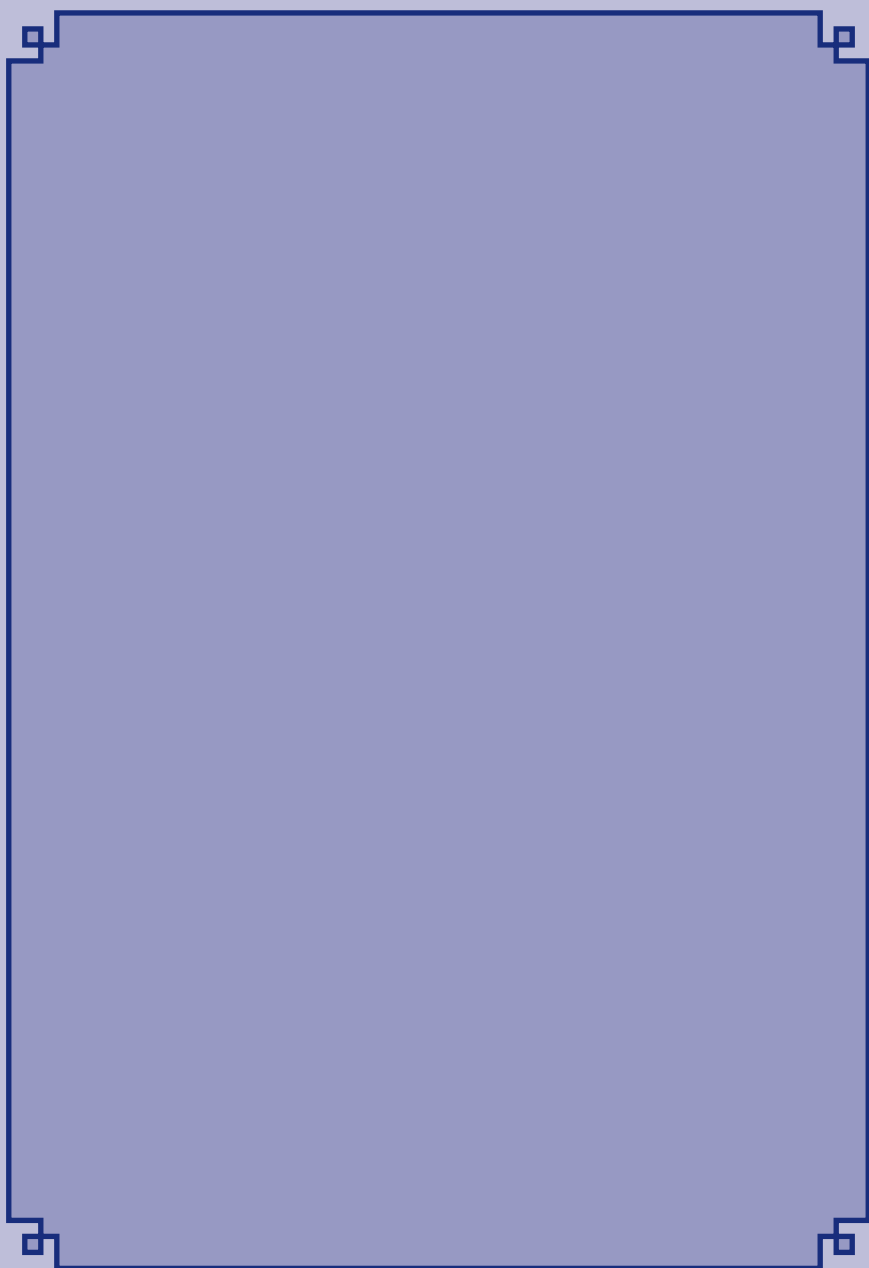
1	अचित्त	Non-Living
2	अचौर्य	Non-Stealing
3	अचौर्य महाव्रत	Non-Stealing Vow
4	अजीव	Non-Living Matter
5	अणुव्रत	Limited Vow
6	अधोलोक	Lower Part of Universe
7	अन्तराय	Obstructing
8	अनेकान्तवाद	Many Sidedness
9	अपकाय	Water Beings
10	अपरिग्रह	Non-Possession
11	अपरिग्रह महाव्रत	Non-Possession Vow
12	अल्पसंख्यक	Minority
13	अवधिज्ञान	Limited Knowledge
14	अहिंसा	Non-Violence
15	अहिंसा महाव्रत	Non-Violence Vow
16	आत्मा	Soul
17	आस्तिक	Theist
18	आश्रव	Influx of Karmas
19	इन्द्रियां	Senses
20	ईष्ट	Desired
21	ऊर्ध्वलोक	Upper Part of Universe
22	कषाय	Passions
23	केवल दर्शन	Complete Vision
24	केवल ज्ञान	Complete Knowledge
25	क्रोध	Anger

26	घनघाती	Destructive
27	घ्राण इन्द्रिय	Nose Sense
28	चक्षु इन्द्रिय	Eye Sense
29	चेतना	Soul
30	जिन	Conqueror
31	जीव	Living Beings, Soul
32	तत्व	Fundamentals
33	तिर्यच	Animal Beings
34	तेरुकाय	Fire Beings
35	दर्शनावरणीय	Perception Obscuring
36	द्वेष	Hate
37	नारकी	Infernal Beings
38	नास्तिक	Atheistic
39	निर्जरा	Eradication of Karmas
40	पुण्य	Results of Good deed
41	पृथ्वीकाय	Earth Beings
42	बन्ध	Bondage of Karmas
43	ब्रह्मचर्य	Celibacy
44	ब्रह्मचर्य महाव्रत	Chaste Vow
45	मध्यलोक	Middle Part of Universe
46	मान	Pride
47	माया	Deceit
48	मुक्तजीव	Liberated Beings
49	मोहनीय	Deluding
50	मोक्ष	Liberation



51	रसना इन्द्रिय	Tounge Sense
52	राग	Attachment
53	लोभ	Greed
54	वनस्पतिकाय	Plant Beings
55	वायुकाय	Air Beings
56	वीतराग	Omnipresent
57	सचित	Living
58	सत्य	Truthness
59	सत्य महाव्रत	Truthness Vow
60	संवर	Stoppage of Karmas

61	संसारी	Worldly
62	सम्यक चरित्र	Right Character
63	सम्यक दर्शन	Right Vision
64	सम्यक ज्ञान	Right Knowledge
65	सर्वज्ञ, सर्वदर्शी	Omnipresent
66	सिद्धांत	Principle
67	स्पर्शन इन्द्रिय	Skin Sense
68	क्षय	Destroy
69	त्रसकाय	Moving Beings
70	ज्ञानावरणीय	Knowledge Obscuring
71	श्रोत्र इन्द्रिय	Ear Sense



## भाग-1

### जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना
2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना
3. सम्प्रदाय-निर्पेक्ष धर्म की सही जानकारी देना
4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरूक नागरिक तैयार करना
5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना
6. भय मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना